सूरह – एक कहानी

# सूरह अत-तूर

## पहाड़

पूरा सफ़र – पहाड़ की क़सम और बे-जवाब सवाल –
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 52 • 49 आयतें • मक्की

**नूरानी इल्म**

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

### एक नज़र में सूरह

वत्-तूर। व किताबिम्-मस्तूर। फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूर
1-3. तूर (पहाड़) की क़सम। और लिखी हुई किताब की, खुले वरक़ में।

इन्न 'अज़ाब रब्बिक ल-वाक़ि'। मा लहू मिन दाफ़ि'
7-8. बेशक तुम्हारे रब का अज़ाब होने वाला है, उसे कोई टालने वाला नहीं।

वल्लज़ीन आमनू वत्तब-'अत्हुम ज़ुर्रिय्यतुहुम बि-ईमानिन अल्हक़्ना बिहिम ज़ुर्रिय्यतहुम
21. और जो ईमान लाए और उनकी औलाद ने ईमान में उनका साथ दिया, हम उनकी औलाद को उनसे मिला देंगे।

अम ख़ुलिक़ू मिन ग़ैरि शै-इन अम हुमुल्-ख़ालिक़ून
35. क्या वो बग़ैर किसी चीज़ के पैदा हो गए, या वो ख़ुद ख़ालिक़ हैं?

वस्बिर लि-हुक्मि रब्बिक फ़-इन्नक बि-अ'युनिना
48. और अपने रब के फ़ैसले पर सब्र करो, क्योंकि तुम हमारी आँखों के सामने हो।

व सब्बिह् बि-हम्दि रब्बिक हीन तक़ूम
48. और जब तुम उठो तो अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करो।

## पाँच अज़ीम क़समें

बेटा, ये सूरह पाँच क़समों से खुलती है, और हर एक कोई जगह या चीज़ है बड़ी तक़दीस वाली। अल्लाह गवाह जमा कर रहे हैं।

'**वत्-तूर** — **पहाड़** की क़सम।' ये कोह-ए-तूर है — वो पहाड़ जहाँ मूसा (अलैहि0) ने अपने रब से बात की, जहाँ तौरात दी गई, जहाँ एक पहाड़ अल्लाह के जलाल की तजल्ली पर चूर चूर हो गया।

'**व किताबिम्-मस्तूर** — और **लिखी हुई किताब** की — **फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूर** — खुले **वरक़** में।' एक किताब लिखी और पढ़ने के लिए बिछी हुई — उलमा लौह-ए-महफ़ूज़, नाज़िल-शुदा सहीफ़े, और आमाल के रिकॉर्ड का ज़िक्र करते हैं।

'**वल्-बैतिल्-मा'मूर** — और **बसे हुए घर** की क़सम।' बेटा, ये उन अजाइब में से एक है जो नबी ﷺ ने मेराज की रात देखे। आपने एक घर बयान किया आसमानों में ठीक का'बा के ऊपर, जिसमें **सत्तर हज़ार फ़रिश्ते** हर रोज़ दाख़िल होते हैं — और एक बार निकल जाएँ, तो फिर कभी उसमें वापस नहीं आते।

बेटा, रुक कर उस गिनती को अपने ऊपर काम करने दीजिए। सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हर दिन, और एक भी दोबारा नहीं। तख़्लीक़ की शुरुआत से। **अल्लाह के इतने इबादत-गुज़ार हैं, एक घर में, एक आसमान में** — और वो उनमें से एक के भी कभी मोहताज न थे। और फिर भी वो हमें, छोटे और भूलने वाले, अपनी इबादत की तरफ़ बुलाते हैं।

'**वस्-सक़्फ़िल्-मरफ़ू'** — और **बुलंद छत** की क़सम' — आपके ऊपर वाला आसमान, बिना सुतून के थमा हुआ। '**वल्-बहिल्-मस्जूर** — और उस **समुंदर** की जो आग से **भरा** है' — उलमा 'मस्जूर' को उबला हुआ और भरा हुआ, और उस समुंदर के तौर पर समझाते हैं जो आख़िरी दिन आग लगाया जाएगा।

और ये पाँच बड़ी क़समें किस पर खाई गईं? '**इन्न 'अज़ाब रब्बिक ल-वाक़ि'** — बेशक, तुम्हारे रब का **अज़ाब होने वाला** है — **मा लहू मिन दाफ़ि'** — उसे कोई **टालने वाला** नहीं।'

## वो दिन जब आसमान लर्ज़ेगा

'**यौम तमूरुस्-समा-उ मौरा** — जिस दिन **आसमान** सख़्त झूलने से **झूलेगा** — **व तसीरुल्-जिबालु सैरा** — और **पहाड़ चलेंगे**, हट कर।'

बेटा, एक ऐसा आसमान सोचिए जो कटोरे में हिले पानी की तरह थरथराए, और पहाड़ चलते हुए। और फिर आयतें बयान करती हैं कि मुनकिरों को आग की तरफ़ हाँका जाएगा और कहा जाएगा: '**हाज़िहिन्-नारुल्-लती कुन्तुम बिहा तुकज़्ज़िबून** — **ये** वो आग है जिसे तुम **झुठलाते** थे!'

'**अ फ़-सिहुन हाज़ा अम अन्तुम ला तुब्सिरून** — क्या ये **जादू** है, फिर? या तुम **देखते** नहीं?' बेटा, वही लफ़्ज़ जो उन्होंने हर मोजिज़े पर फेंका — 'सिह्र', जादू

— उन पर वापस फेंका जाता है।

'इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू — इसमें दाख़िल हो जाओ, फिर **सब्र करो या न करो** — सवा-उन 'अलैकुम — तुम्हारे लिए **बराबर** है।'

बेटा, इस पर ठहरिए — क्योंकि यहाँ एक बहुत गहरा सबक़ है। **वहाँ सब्र कुछ नहीं ख़रीदता।** इस दुनिया में सब्र सोना है: वो अज्र लाता है, गुनाह मिटाता है, दर्जे उठाता है। वहाँ? 'बराबर है।' **सब्र का लेन-देन काउंटर सिर्फ़ इस ज़िंदगी में खुला है** — और वो आज खुला है।

## ख़ानदान जो दोबारा मिला दिए जाएँगे

फिर सूरह का रुख़ मुत्तक़ीन की तरफ़ मुड़ता है: 'बेशक परहेज़गार बाग़ों और नेमत में होंगे... **कुलू वश्रबू हनी-अम्-बिमा कुन्तुम त'अ्मलून** — खाओ और पियो **मज़े से**, उसके बदले जो तुम करते थे।'

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जो हर वालिद के दिल को थाम लेती है: '**वल्लज़ीन आमनू वत्तब-'अत्हुम ज़ुर्रिय्यतुहुम बि-ईमानिन** — और जो ईमान लाए और उनकी **औलाद** ने **ईमान में** उनका साथ दिया — **अल्हक़्ना बिहिम ज़ुर्रिय्यतहुम** — हम उनकी औलाद को **उनसे मिला देंगे** — **व मा अलत्नाहुम मिन 'अमलिहिम मिन शै** — और हम उनके अमल में से कुछ **कम नहीं करेंगे**।'

बेटा, इसकी ख़ूबसूरती समझिए। जन्नत में दर्जे हैं, और हर एक अपने अमल से अपनी जगह पाता है। तो एक बाप ऊँचे दर्जे में हो सकता है और उसका बेटा नीचे। और अल्लाह फ़रमाते हैं: **मैं औलाद को माँ-बाप के दर्जे तक उठा दूँगा** — ताकि वो साथ रहें।

और ग़ौर कीजिए किसके ख़र्चे पर? **किसी के नहीं।** 'हम उनके अमल में से कुछ कम नहीं करेंगे।' बाप का दर्जा घटाया नहीं जाएगा; बेटा ऊपर उठा दिया जाएगा। **ये ख़ालिस अता है, कोई तक़सीम नहीं।**

मगर बेटा, शर्त पर ग़ौर कीजिए: '**बि-ईमानिन**' — **ईमान के साथ** उनका साथ

दिया। ये आयत उस औलाद के लिए नहीं जिसने बस नाम रख लिया; ये उस औलाद के लिए है जो ईमान पर उनके पीछे चली।

तो अपने बच्चों के लिए **ईमान** छोड़िए, सिर्फ़ जायदाद नहीं। जायदाद उन्हें आपके साथ नहीं मिलाएगी — **ईमान मिलाएगा।**

'**कुल्लुम्-रि-इम्-बिमा कसब रहीन** — हर शख़्स अपनी कमाई के बदले **गिरवी** है।'

## वो सवाल जिनका कोई जवाब नहीं

फिर सूरह वो करती है जिसके लिए वो मशहूर है, बेटा: वो मुनकिरों पर **सवालों की बारिश** कर देती है — और हर सवाल एक दरवाज़ा बंद कर देता है।

पहले वो उनके इल्ज़ामात गिनवाती है: 'क्या वो कहते हैं: **शायर** है, हम इसके किसी हादसे का इंतिज़ार कर रहे हैं?' और जवाब: 'कह दीजिए: **इंतिज़ार करो — मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वालों में हूँ।**'

बेटा, और उस से पहले हुक्म देखिए: '**फ़-ज़क्किर** — तो **नसीहत करते रहो** — **फ़-मा अन्त बि-नि'अ्मति रब्बिक बि-काहिनिंव्-व ला मज्नून** — तुम अपने रब के फ़ज़्ल से न **काहिन** हो न **मजनून**।' ग़ौर कीजिए: **'नसीहत करते रहो' पहले आता है, इल्ज़ाम का जवाब बाद में।** जब लोग लेबल लगाएँ, काम रोकिए मत।

और फिर वो सवालों का सिलसिला: '**अम त'मुरुहुम अह्लामुहुम बि-हाज़ा** — क्या उनकी **अक़्लें** उन्हें इसका हुक्म देती हैं, **अम हुम क़ौमुन ताग़ून** — या वो एक **सरकश** क़ौम हैं?'

'**अम यक़ूलून तक़व्वलह** — क्या वो कहते हैं: उसने इसे **ख़ुद गढ़** लिया? **बल ला यु'मिनून** — बल्कि वो **ईमान** नहीं लाते। **फ़ल्-य'तू बि-हदीसिम्-मिस्लिही इन कानू सादिक़ीन** — तो वो इस जैसा **एक कलाम** ले आएँ, अगर वो सच्चे हैं।'

और फिर, बेटा, वो आयत जिसे मंतिक़ का सब से मुख़्तसर और सब से तबाह कुन जुमला कहा गया:

'**अम ख़ुलिक़ू मिन ग़ैरि शै-इन अम हुमुल्-ख़ालिक़ून** — क्या वो **बग़ैर किसी चीज़ के** पैदा हो गए? या वो **ख़ुद ख़ालिक़** हैं?'

बेटा, मंतिक़ के बारे में सोचिए। आपके वुजूद के सिर्फ़ **तीन** इमकान हैं। **एक:** आप बिल्कुल बिना सबब के आ गए। **दो:** आपने ख़ुद को बनाया — जो मुहाल है, क्योंकि ये करने के लिए आपको अपने वुजूद से **पहले** मौजूद होना पड़ता। **तीन:** किसी ने आपको बनाया।

**कोई चौथा ऑप्शन नहीं।** और पहले दो उस लम्हे गिर जाते हैं जब आप उन्हें ज़ोर से कहते हैं। तो आयत आगे बहस नहीं करती; ये बस **तीन दरवाज़े खोल कर छोड़ देती है** और ईमानदार ज़ेहन को उस वाहिद से गुज़रने देती है जो क़ायम रहता है।

'अम ख़लक़ुस्-समावाति वल्-अर्ज़ — या उन्होंने आसमान और ज़मीन बनाए? **बल ला यूक़िनून** — बल्कि, उन्हें **यक़ीन** नहीं।'

बेटा, और फिर वही तशख़ीस: **'ला यूक़िनून' — उनमें यक़ीन की कमी है। दलील की नहीं। यक़ीन की।**

और सवाल लहरों की तरह जारी रहते हैं: क्या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं? क्या उनके पास कोई **सीढ़ी** है जिस से वो आसमानों की बात चुरा कर सुनते हैं? क्या उनके पास ग़ैब का इल्म है और वो उसे लिखते हैं? क्या वो कोई साज़िश करना चाहते हैं — तो **जो कुफ़्र करते हैं वही हैं जिनके ख़िलाफ़ साज़िश हो रही है?** क्या उनका अल्लाह के सिवा कोई माबूद है?

बेटा, सवाल के बाद सवाल, और हर एक का वही जवाब: **नहीं।** ये क़ुरआन उस तरह बहस कर रहा है जैसे एक पुर-सुकून आदमी उस से बहस करता है जिसके पास अब वजहें ख़त्म हो चुकी हैं।

## सब्र करो — तुम हमारी आँखों में हो

और अब, बेटा, सूरह नबी ﷺ के लिए एक ऐसे हुक्म पर ख़त्म होती है जो कभी नाज़िल हुए सब से तसल्ली-बख़्श जुमलों में से है:

'**वस्बिर लि-हुक्मि रब्बिक** — और अपने रब के **फ़ैसले** पर **सब्र** करो — **फ़-इन्नक बि-अ'युनिना** — क्योंकि बेशक, **तुम हमारी आँखों में हो।**'

बेटा, सब कुछ रोकिए और इसे अंदर ले जाइए। '**बि-अ'युनिना**' — हमारी आँखों में, हमारी नज़र के नीचे, हमारी निगरानी में। **वही जुमला जो नूह की कश्ती के तूफ़ान से गुज़रने के लिए इस्तेमाल हुआ।**

तसव्वुर कीजिए उन लफ़्ज़ों का उस आदमी के लिए क्या मतलब था जिसे उसके अपने शहर में दीवाना कहा जा रहा था, जो अपने पैरोकारों को तशद्दुद सहते, काटे हुए, मज़ाक़ उड़ाए जाते, शिकार किए जाते देख रहा था। अल्लाह ने ये नहीं कहा 'मैं उन्हें कल तबाह कर दूँगा'। उन्होंने कहा: **सब्र करो — तुम्हारी निगरानी की जा रही है।**

बेटा, यही वो चीज़ है जिसकी एक मोमिन को मुश्किल में सब से ज़्यादा ज़रूरत होती है। हमेशा हल नहीं — कभी बस ये यक़ीन कि उसे **देखा जा रहा है।** इंसानी तकलीफ़ की ज़्यादातर चीज़ ना-क़ाबिल-ए-बर्दाश्त तब बनती है जब एक शख़्स ख़ुद को **न-दिखता** महसूस करे: *कोई नहीं जानता मैं क्या उठाता हूँ, कोई नहीं देखता इसकी मुझे क्या क़ीमत पड़ती है, कोई नहीं समझता।* और अल्लाह अपने बंदे से कहते हैं: **तुम मेरी आँखों में हो।**

इसे अपने मुश्किल दिनों में ले जाइए, बेटा। वो मेहनत जो कोई नहीं देखता, वो सब्र जिसका कोई क्रेडिट नहीं देता, वो आँसू जो कोई नहीं देखता — **'इन्नक बि-अ'युनिना'।**

'**व सब्बिह् बि-हम्दि रब्बिक हीन तक़ूम** — और अपने रब की तारीफ़ के साथ **तस्बीह** करो **जब तुम उठो** — **व मिनल्-लैलि फ़-सब्बिह्हु** — और **रात** में, उसकी तस्बीह करो — **व इद्बारन्-नुजूम** — और **सितारों के ढलने** पर।'

बेटा, वो नुस्ख़ा ग़ौर कीजिए जो सब्र के साथ आता है: **उठने पर ज़िक्र, रात में ज़िक्र,

और उस घड़ी ज़िक्र जब सितारे सुबह से पहले ढल जाते हैं।** सब्र इस दीन में ख़ामोश बर्दाश्त नहीं — ये **ज़िक्र से भरी हुई बर्दाश्त** है। दोनों एक साथ दिए गए क्योंकि एक दूसरे के बग़ैर क़ायम नहीं रहता।

और यूँ ये सूरह — जो एक पहाड़ की क़सम और एक ऐसे घर से खुली जिसे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते रोज़ ज़मानत करते हैं — एक छोटे इंसान को ये कह कर ख़त्म होती है: **सब्र करो, तुम मेरी आँखों में हो, और सुबह मेरा नाम अपनी ज़ुबान पर रखो।**

यही पूरा दीन एक इख़्तितामी हुक्म में है।

## इस सूरह से क्या सीखा

**1.** सत्तर हज़ार फ़रिश्ते बैतुल-म'मूर में रोज़ दाख़िल होते और कभी नहीं लौटते — वो कभी आपकी इबादत के मोहताज न थे, फिर भी वो आपको बुलाते हैं।

**2.** वहाँ सब्र कुछ नहीं ख़रीदता: सब्र का लेन-देन काउंटर सिर्फ़ इस ज़िंदगी में खुला है।

**3.** ईमान वाले ख़ानदान दोबारा मिला दिए जाते हैं — अल्लाह औलाद को वालिद के दर्जे तक बुलंद करते हैं बिना किसी से कम किए।

**4.** शर्त 'बि-ईमानिन' है — तो अपने बच्चों के लिए ईमान छोड़िए, सिर्फ़ जायदाद नहीं।

**5.** जब वो लेबल लगाएँ तब काम करते रहिए; 'फ़-ज़क्किर' इल्ज़ाम के जवाब से पहले आता है।

**6.** आपके वुजूद की सिर्फ़ तीन वज़ाहतें मुमकिन हैं, और उनमें से दो ज़ोर से कहते ही गिर जाती हैं।

**7.** जब कोई आपकी जद्दो-जहद न देखे, याद रखिए: 'इन्नक बि-अ'युनिना' — तुम हमारी आँखों में हो।

या अल्लाह, हमें अपनी नज़र में रखिए, हमारे ख़ानदान अपने बाग़ों में मिला दीजिए, और हमारे सब्र को अपनी याद से भर दीजिए। आमीन।